वीर रस

परिभाषा :— युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में निहित 'उत्साह' नामक स्थायी भाव के जाग्रत होने के प्रभावस्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे वीर रस कहते हैं।

<u>OR</u>

जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है तब वीर रस की निष्पत्ति होती है।

Ex. "साजी चतुरंग सेन अंग में उमंग भरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत हैं।"

स्थायी भाव – उत्साह
आश्रय – नायक/वीर
आलम्बन - शत्रु
अनुभाव - रोमांच/अंग स्फुरण
उद्दीपन - युद्ध के बाजे
संचारी भाव – आवेग, हर्ष, रोमांचकता।

आये होंगे यदि भरत कुमति-वश वन में,
तो मैंने यह संकल्प किया है मन में—
उनको इस शर का लक्ष्य चुनूँगा क्षण में,
प्रतिषेध आपका भी न सुनूँगा रण में।

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

हाथ में ध्वज रहे बाल दल सजा रहे,

ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो

तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं

वीर तुम बढ़े चलो धीर तुम बढ़े चलो। .

मैं सत्य कहता हूँ सखे सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे,
है और कि तो बात क्या गर्व मैं करता नहीं,
मामा तथा निज तात से भी युद्ध में डरता नहीं।

करुण रस

परिभाषा –

"बन्धु विनाश, बन्धु वियोग, द्रव्यनाश, और इष्ट के अदैव के लिए बिछुड़ जाने से करुण रस उत्पन्न होता है।"

or

जब शोक नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है तब करुण रस की निष्पत्ति होती है।

Ex. "मणि खोये भुजंग सी जननी
फण सा पटक रही थी सीस।
अन्धी आज बनाकर मुझको
किया न्याय तुमने जगदीश॥"

उदाहरण—

अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल,
खिले थे चुम्बन शून्य कपोल,
हाय रुक गया यहीं संसार,
बना सिंदूर अनल अंगार,
वातहत लतिका वह सुकुमार,
पड़ी है छिन्नाधार !

पन्त

स्पष्टीकरण—इन पंक्तियों में 'विनष्ट पति' आलम्बन तथा 'मुकुट का बँधना, हल्दी के हाथ होना, लाज के बोलों का न खुलना' आदि उद्दीपन हैं। 'वायु से आहत लतिका के समान नायिका का बेसहारे पड़े होना' अनुभाव है तथा उसमें विषाद, दैन्य, स्मृति, जड़ता आदि संचारियों की व्यंजना है। इस प्रकार करुणा के सम्पूर्ण उपकरण और 'शोक' नामक स्थायी भाव इस पद्य को करुण रस-दशा तक पहुँचा रहे हैं।

हास्य रस

परिभाषा –

किसी की विकृत, वेशभूषा चेष्टा आदि को देखकर मन में उत्पन्न हास नामक स्थायी भाव जब विभाव अनुभाव व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है तब 'हास्य रस' की निष्पत्ति होती है।

Ex.

उदाहरण "बिन्ध्य के बासी उदासी तपो व्रतधारि महा बिनु नारि दुखारे।
गौतमतीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृन्द सुखारे।।
ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू! करुणा करि कानन को पगु धारे।।" *तुलसीदास*

स्पष्टीकरण

उक्त पद्यांश में विन्ध्य क्षेत्र में पहुँचे श्रीराम के चरण स्पर्श से पत्थर को सुन्दर नारी में परिवर्तित होते जान वहाँ विद्यमान नारियों से दूर रहने वाले तपस्वीगण के प्रसन्न होने का वर्णन है। इस पद्यांश में स्थायी भाव हास है। आलम्बन है– राम और उद्दीपन है– गौतम ऋषि की पत्नी का उद्धार। अनुभाव है– मुनियों की कथा आदि सुनाना और संचारी भाव हैं– हर्ष, चंचलता एवं उत्सुकता। अतः यहाँ 'हास्य रस' है।